"हरिमंदर"

• गुर परसादी वेख तू - हरि मंदर तेरै नाल । हरि मंदर सबदे खोजीऐ - हरि नामो लेह सम्हाल ।

अर्थः- हे भाई ! तू गुरु की कृपा से देख, परमात्मा का घर तेरे साथ है तेरे अंदर ही है । इस 'हरि - मन्दिर' को गुरु के शब्द से ही पाया जा सकता है हे भाई ! गुरु के शब्द में जुड़ और परमात्मा का नाम अपने अंदर संभाल के रख ।

सची भगत - सचा हरि मंदर - प्रगटी साची सोइ । रहाउ ।

अर्थः- उस मनुष्य का शरीर परमात्मा का कभी ना डोलने वाला घर बन जाता है उसका शरीर ऐसा 'हरि - मन्दिर' बन जाता है जिसको विकारों की अंधेरी उड़ा नहीं सकती । रहाउ ।

हरि मंदर एहु सरीर है - गिआन रतन परगट होइ । मनमुख मूल न जाणनी - माणस हरि मंदर न होइ ।

अर्थः- हे भाई ! मनुष्य का यह शरीर 'हरि - मदिर' है पर, यह भेद सतिगुरु की बख्शी आत्मिक जीवन की कीमती सूझ से ही खुलता है । अपने मन के पीछे चलने वाले जगत के मूल परमात्मा के साथ सांझ नहीं डालते इसलिए वे समझते हैं कि मनुष्य के अंदर 'हरि - मन्दिर' नहीं हो सकता ।

धुर लेख लिखिआ सु कमावणा - कोइ न मेटणहार ।

अर्थः- धुर दरगाह से हरेक मनुष्य के किए कर्मों के अनुसार जो लेख हरेक शरीर 'हरि - मन्दिर' में लिखा जाता है उस लेख के अनुसार हरेक प्राणी को चलना पड़ता है । कोई मनुष्य अपने किसी उद्यम से उस लेख को मिटाने के काबिल नहीं है ।

हरि मंदर एहु जगत है - गुर बिन घोरंधार । दूजा भाउ कर पूजदे - मनमुख अंध गवार ।

अर्थः- हे भाई ! ये सारा संसार भी 'हरि - मन्दिर' ही है परमात्मा के रहने का घर है । पर गुरु की शरण के बिना आत्मिक जीवन की ओर से घोर अंधकार बना रहता है और, जीवों को इस भेद की समझ नहीं पड़ती । अपने मन के पीछे चलने वाले मनुष्य, आत्मिक जीवन की ओर से अंधे होए हुए मूर्ख मनुष्य परमात्मा के बिना औरों से प्यार डाल के उसको पूजते - सत्कारते रहते हैं ।

हरि मंदर मह नाम निधान है - ना बूझह मुगध गवार ।

अर्थः- हे भाई ! इस शरीर 'हरि - मन्दिर' में परमात्मा का नाम मनुष्य के लिए खजाना है, पर मूर्ख लोग ये बात नहीं समझते ।

गुर की बाणी - गुर ते जाती - जे सवद रते रंग लाइ ।

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य गुरु के माध्यम से परमात्मा के संग प्यार बना के गुरु के शब्द में रंगे रहते हैं, वे मनुष्य गुरु से गुरु की वाणी की कद्र समझ लेते हैं ।

हरि मंदर मह मन लोहट है - मोहिआ दूजे भाइ । पारस भेटिऐ कंचन भइआ - कीमत कही न जाइ ।

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य माया के मोह में फंस के आत्मिक जीवन की राशि - पूंजी लुटा बैठता है उसका मन इस शरीर 'हरि - मन्दिर' में लोहा ही बना रहता है । पर हाँ यदि गुरु - पारस मिल जाए तो लोहे जैसा निकम्मा बन चुका उसका मन सोना हो जाता है फिर वह इतने ऊँचे जीवन वाला हो जाता है कि उसका मूल्य नहीं पाया जा सकता ।

गुरमती हरि पाइआ - माइआ मोह परजाल । नानक गुरमुख वणजीऐ - सचा सउदा होइ । (3-1346)

अर्थः- हे नानक ! सरब निवासी प्रभु के नाम का सौदा गुरु के द्वारा ही किया जा सकता है वणज किया जा सकता है । यह सौदा सदा कायम रहने वाला सौदा है । first line arth not find

• हरि मंदर सोई आखीऐ - जिथहु हरि जाता । मानस देह गुर बचनी पाइआ - सभ आतम राम पछाता ।

अर्थः- वैसे तो सारे शरीर ही 'हरि - मन्दिर' अर्थात ईश्वर के रहने की जगह हैं पर असल में वही शरीर 'हरि - मन्दिर' कहा जाना चाहिए जिसमें ईश्वर पहचाना जाए सो, मनुष्य का शरीर 'हरि - मन्दिर' है क्योंकि मनुष्य शरीर में गुरु के हुक्म में चल के ईश्वर को पा सकता है, हर जगह व्यापक ज्योति दिखती है ।

बाहर मूल न खोजीऐ - घर माह विधाता । मनमुख हरि मंदर की सार न जाणनी - तिनी जनम गवाता । सभ महि इक वरतदा - गुर सबदी पाइआ जाई । (1-953)

अर्थः- शरीर से बाहर तलाशने की बिल्कुल ही आवश्यक्ता नहीं, इस शरीर घर में ही विधाता बस रहा है । पर मन के पीछे चलने वाले बंदे इस मनुष्य शरीर 'हरि - मन्दिर' की कद्र नहीं जानते, वे मानव जन्म मन के पीछे चल के ही गवा जाते हैं । वैसे तो सभी में एक ही प्रभु व्यापक है, पर मिलता है गुरु के शब्द से ही ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"